# उपन्यास की परिभाषा व हिन्दी उपन्यासों की विचारधाराएँ : एक अध्ययन

**सोमवीर**

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय,
अटेली, हरियाणा।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 6, Issue 3, (May-June 2018)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

**सार**

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है । किसी भी समाज की सम्पूर्ण झलक उसके साहित्य में उपलब्ध होती है । मानव जीवन के सम्पूर्ण जीवन की विभिन्न घटनाओं उसके सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, आकर्षण-विकर्षण आदि की मुक्त अभिव्यक्ति साहित्य में मिलती है । इस मुक्त अभिव्यक्ति को हिन्दी साहित्यकारों ने विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है । हिन्दी गद्य विधाओं में उपन्यास ऐसी विधा है जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों की झलक प्राप्त होती है । इन उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ के केवल बाहरी पक्षों को नहीं बल्कि सामाजिक यथार्थ को झेल रहे लोगों के हृदय की भावनाएँ, विभिन्न मनोस्थितियां भी उजागर होती हैं । साहित्य की प्रमुख गद्य विधाओं में उपन्यास भी एक है । यह साहित्य का प्रमुख अंग है । यह साहित्य का नया अंग होने के बाद जन साधारण के बीच लोकप्रिय है । उपन्यास में कथा होती है, घटनाएँ होती हैं, कल्पनाएँ, यथार्थ आदि का समावेश होता है ।

## उपन्यास की परिभाषा

प्रेमचन्द :

> ''मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है ।''

## उपन्यास के तत्व

1. कथावस्तु
2. पात्र योजना व चरित्र चित्रण
3. कथोपकथन अथवा संवाद
4. देशकाल व वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्देश्य

### कथावस्तु

यह उपन्यास का पहला और प्रमुख तत्व होता है । मानव जीवन परिवर्तनशील है । यही परिवर्तन ही विभिन्न घटनाओं को जन्म देता है। इन घटनाओं पर ही उपन्यास का ढांचा खड़ा होता है । उपन्यास में घटनाएं प्रायः क्रमानुसार होनी चाहिएं । अच्छे उपन्यास के अन्दर तीन गुण होने चाहिएं - मौलिकता, रोचकता और स्वाभाविकता । मौलिकता से हमारा अभिप्राय यह है कि उपन्यास में वर्णित घटनाएँ कथानक आदि सभी रचनाकार की अपनी कल्पना होनी चाहिए । दूसरे उपन्यासों के साथ समानता होने के कारण मौलिकता का अभाव हो जाता है जिसके कारण वह दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में असफल रहती है । कथानक का दूसरा गुण रोचकता का होना है । उपन्यास का कथानक इस प्रकार का तो हो कि पाठक को रूचिकर लगे । उपन्यास के आरम्भ में ही पाठक के हृदय में जिज्ञासा का भाव उत्पन्न हो जाना चाहिए । यदि यह जिज्ञासा अन्त तक बनी रहती है तो निश्चय ही कथानक रूचिकर है । कथानक का तीसरा प्रमुख गुण स्वाभाविकता है । स्वाभाविकता से अभिप्राय है कि उपन्यास में सभी घटनाएँ, कार्य-व्यापार मानव से सम्बन्धित होने चाहिएं । वे इसी संसार से जुडे प्रतीत होने चाहिएं । अलौकिक घटनाओं का समावेश कथानक में नहीं होना चाहिए ।

### पात्र-योजना अथवा चरित्र चित्रण

उपन्यास में पात्र योजना महत्वपूर्ण होती है । उपन्यास के पात्र उपन्यास के पात्र न लग कर जीवन में सम्पर्क में आए व्यक्तियों के समान लगें और उनके साथ ममता, घृणा, करूणा के भाव जागृत हों तो उपन्यास का पात्र-योजना सफल होगा।

### कथोपकथन

उपन्यास में प्राय पात्रों के परस्पर वार्तालाप से कथावस्तु को आगे बढ़ाया जाता है । पात्रों को परस्पर वार्तालाप ही कथोपकथन अथवा संवाद कहलाता है । संवाद से ही पात्रों का चरित्र चित्रण होता है । अच्छी संवाद योजना का तात्पर्य है सहज, सरल व छोटे शब्द ।

### देशकाल व वातावरण

उपन्यास में जिस समय की चर्चा होती है उसके अनुसार ही भाषा व शैली की योजना होनी चाहिए । उपन्यास की घटनाएं देशकाल के अनुरूप ही होनी चाहिए ।

### भाषा-शैली

उपन्यास की भाषा अत्यन्त सहज, सरल व प्रवाहमान होनी चाहिए । भाषा के माध्यम से ही कथा को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है ।

### उद्देश्य

कोई भी रचना उद्देश्यहीन नहीं होती है । उपन्यास में उद्देश्य का मुख्य स्थान होता है । उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन करना, उपदेश देना, मानव जीवन के रहस्यों को उद्घटित करना आदि हो सकता है।

## हिन्दी उपन्यासों में समाविष्ट आधुनिक विचारधाराएं

मानव चिन्तनशील प्राणी है । इसी चिन्तन के फलस्वरूप विभिन्न विचारधाराओं का विकास हुआ । प्राचीन युग में चिन्तकों के चिन्तन का प्रमुख आधार मुख्य रूप से आध्यात्म था । आधुनिक युग में जीवन के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ जीवन में प्रचलित विभिन्न विचारधाराओं की अभिव्यक्ति के द्वारा आदर्श की प्रतिष्ठा करना प्रारम्भिक हिन्दी उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य रहा है ।

## हिन्दी उपन्यासों की आधुनिक विचारधाराएं

### समाजवादी विचारपरक उपन्यास

हिन्दी के मौलिक उपन्यासों में अधिकांश उपन्यास सामाजिकता की प्रवृतीयों को लिए हुए हैं । इस सामाजिकता की प्रवृतीयों का प्रारम्भ भारतेन्दु युग में हुआ । मशीनी युग में, भारतीय जन जीवन के बीच, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अनेक समस्याएं अपना मुंह खोले बैठी थी। गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर उपन्यासकार भी समाज की सुधारवादी नीति को अपनाकर सामाजिक समस्याओं को अपनी कलाकृतियों में प्रस्तुत करने लगा । इन समस्याओं में दहेज प्रथा, बाल-विवाह, जमींदारी-प्रथा को प्रस्तुत किया गया । उपन्यासकारों की नजर में इन समस्याओं का सृजन व्यक्ति न होकर समाज है ।

### मनोवैज्ञानिक उपन्यास

प्रेमचन्दोतर काल में वैयक्तिकता, स्वतन्त्र चिन्तक की भावना का विकास तीव्रतर गति से हुआ है । मानव में अस्तित्व रक्षा की भावना जागृत होने में पाश्चात्य अंग्रेजी शिक्षा व वैज्ञानिक अविष्कारों का विशेष हाथ रहा है । अंग्रेजी शिक्षा व वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण व्यक्ति में अपने शोषित पीड़ित एवं अमित भावनाओं को आलोकित करने का स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित हुआ है । इसके बावजूद सजा का आतंक भी व्यक्ति के ऊपर बढ़ता गया है । अब उपन्यासकारों ने व्यक्ति के जीवन को प्रस्तुत करने में तथा उसके आदर्शात्मक स्वरूप् को बनाए रखने के लिए बाह्य घटनाओं व समस्याओं को उतना महत्व प्रदान नहीं किया जितना पात्रों या चरित्रों के मानसिक या भावनात्मक पहलू को । मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने काल्पनिकता व भावनात्मकता से अपने को अलग कर, सूक्ष्म यथार्थता को अपनाकर, यह बताया कि उस व्यक्ति या पात्र के चरित्र की कठोरता तथा मृदुलता किसी न किसी मनोवैज्ञानिक कारण की देन है । यह मनोवैज्ञानिकता प्रेमचन्द के उपन्यासों में प्रकट होने लगी, परन्तु यह अस्पष्ट था । इसका स्पष्ट रूप हमें जैनेन्द्र के उपन्यासों में मिलता है । परख, सुनीता कल्याणी, मुक्तिबोध में यह धारणा प्रस्तुत की गयी है । इलाचन्द जोशी के उपन्यासों प्रेत और छाया, सन्यासी पर्दे की रानी, सुबह के भूले, जहाज का पंछी में काम, अहं तथा आर्थिक विषमताजनित हीनता की ग्रन्थि को प्रस्तुत किया है । अज्ञेय का नाम भी मनोविश्लेषणात्मक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

### राजनीतिक उपन्यास

पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय समाज में जहां एक तरफ जमींदारों का शोषण तेज होता गया था, वहीं मशीनी सभ्यता ने मजदूरों की स्थिति को भी अत्यन्त दयनीय बना दिया । पूंजीपति मजदूरों के पश्रिम का शोषण करने लगे । इस प्रकार भारतीय समाज में कृषकों तथा मजदूरों की दशा शोचनीय हो गयी । भारत के अतिरिक्त, विश्व के रंगमंच पर भी उनकी यही दशा थी । आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए मार्क्स जैसे साम्यवादी विचारकों के विचारों को प्रचारित और प्रसारित किया जा रहा था । इस राष्ट्रीय योजना का प्रभाव साहित्यकारों पर भी पड़ा । हिन्दी के अधिकांश उपन्यासकारों युगन आर्थिक विषमता के विरोध में कृषकों तथा मजदूरों के संगठित आन्दोलन जो माननीय अभाव पर आधारित थे को प्रस्तुत करना अपनी रचना का विषय बनाया । युगीन साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित उपन्यासकार के रूप में यशपाल का नाम उल्लेखनीय है । इन्होंने दादा कामरेड, पार्टी

कामरेड, दिव्या, देशद्रोही जैसे उपन्यासों में वर्तमान जीवन के शोषण को व्यक्त किया है । भैरवप्रसाद गुप्त मशाल, गंगा मैया, नया आदमी तथा महेन्द्रनाथ को आदमी और सिक्के, रात अन्धेरी तथा भगवतीचरण वर्मा आदि राजनीतिक उपन्यासकारों के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं ।

**ऐतिहासिक उपन्यास**

बीसवीं शताब्दी में एक अन्य प्रकार के उपन्यासों का स्वरूप भी विकसित हुआ वह था ऐतिहासिक उपन्यास । बीसवीं शताब्दी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों का दायित्व कल्पना से भिन्न यथार्थ जीवन के कटु सत्य को अपनी अनुभूति एवं लोक-तत्व आदि के आधार पर, अतीत की पृष्ठभूमि में साकार करना था । इसलिए ऐतिहासिक उपन्यासों का दायित्व दुहरा हो गया । पहले यह माना जाता था कि ऐतिहासिक उपन्यासों में, प्रख्यात चरित्रों तथा घटनाओं का उल्लेख मात्र कर देना ही पर्याप्त है । परन्तु बीसवीं शताब्दी में एतिहासिक तथ्यों के प्रयोग में नवीन दृष्टिकोण विकसित हुआ । ऐतिहासिक उपन्यास में मानवीय प्रकृति और अनुभूतियों का उतना ही सूक्ष्म तथा मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है जितना सामाजिक उपन्यास में। सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के रूप् में किशोरीलाल गोस्वामी का 'कुसुम कुमारी' नामक उपन्यास विशिष्ट है । सेठ गोविन्ददास का 'इन्दुमती' वृन्दावन लाल वर्मा का 'गढ़ कुंजल' तथा 'विराट की पद्मिनी' भी ऐतिहासिक उपन्यास हैं ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


[1] तीर्थेश्वर सिंह, समकालीन हिन्दी कविता की यथार्थवादी चेतना, प्रथम संस्करण, 2006, मानसी पब्लिकेशन, दरियागंज, दिल्ली ।

[2] नारायण सिंह, बीसवीं शताब्दी, हिन्दी उपन्यास : नए दो पहलू, प्रथम संस्करण, 1976, लोकवाणी प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली ।

[3] ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, 2008, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली ।

[4] राजकुमार सैनी, यथार्थवाद और सौन्दर्य शास्त्र, प्रकाशक: टाइम बुक्स, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली, मुद्रक: कम्पीटेंट प्रिटंर्स, दिल्ली ।

[5] शशिबाला शर्मा, मुक्तिबोध की कविता में यथार्थबोध, प्रथम संस्करण, प्रकाशक: प्रवीण शर्मा, अशोक विहार, दिल्ली ।

[6] सुमित्रा त्यागी, हिन्दी उपन्यास: आधुनिक विचारधाराएं, प्रथम संस्करण, 1978, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली ।